गुरुदेव निशब्द थे और निशब्द सुन लेते थे... कहने का मतलब यह है कि वे बिन बोले ही सबकुछ कह देते थे और अनकही बात सुन लेते थे। वो जानते थे कि हम अपने अतीत में क्या थे और आगे चलकर क्या होंगे। वो किसी को भी सांचे में नहीं ढालते थे, बस उसे आकार देते थे। उनमें सिखाने की फितरत तो सहज रूप से थी। वो एक ऐसे मार्गदर्शक थे, जिनकी थाह लेना आसान नहीं था। उनकी भूमिकाएं, उनकी मिसालें और उनके समझाने के तरीके हमारी समझ से परे थे। हमारे लिए तो बस उनकी सहानुभूति ही काम कर जाती थी। ज्यादातर लोग मानते थे कि वे हम सभी को बहुत चाहते थे। मुझे लगता है कि हम जो थे, उन्होंने हमें उसी खासियत के लिए स्वीकार किया था।

एक अतुलनीय मार्गदर्शक

गुरुदेव ने बा-अदब सब्र और फर्ज़ के एहसास के साथ गुरु की अपनी भूमिका निभाई। उनकी असली कामयाबी तो इस बात में छिपी है कि उन्होंने हमें आध्यात्मिक अज्ञानी से संत बनाया। हम भले ही उनके जितनी ऊंचाई पर ना हों, लेकिन उनके शिष्य कहीं भी कमतर नहीं हैं।

आइए चलते हैं दुर्गापुर और मिलते हैं गुरुदेव के शिष्य कृष्ण मोहन जी से, जिन्होंने कई दशकों तक वहां एक स्थान का संचालन किया।

कृष्ण मोहन जी : एक शिष्य को गुरु बनने में कई हजारों साल लग जाते हैं। बहुत-से लोग गुरु कहलाते हैं। गुरुदेव के बारे में सबसे महान बात यह थी कि वो लोगों के शिष्य बनने से पहले ही उन्हें गुरु बना देते थे।

ये अंदाज़ भी निराला है। जहां दूसरे गुरुओं ने शिष्य बनाए, इस गुरु ने बहुत-से गुरू बनाए और इसीलिए वे स्वयं महागुरु कहलाए।

मिसेज़ जॉली कई दशकों तक भक्ति करती रहीं। वे हर साल महत्वपूर्ण आयोजनों में नियमित तौर पर गुड़गांव पहुंचती थीं। वो गुरुदेव के परम शिष्य मल्होत्रा जी के प्रति भी श्रद्धा रखती थीं।

आइए झांकते हैं उनके नजरिए के आईने में,

मिसेज़ जॉली : यह वो जगह थी जहां कोई प्रवचन, कोई सत्संग, कोई भजन नहीं होते थे। यदि आप किसी भी संत के पास जाते हैं तो प्रवचन होंगे, भक्ति गीत होंगे, कुछ तो होगा, लेकिन यहां कोई प्रवचन, भक्ति गीत, सत्संग या कोई धार्मिक आडंबर नहीं होता था।

एक गुरु के रूप में गुरुदेव आम चलन से बिल्कुल अलग थे। उनके उपचार के तरीके बड़े असामान्य थे। इसमें कोई गढ़ा हुआ नियम नहीं था, हमें कोई वेद पुराण नहीं पढ़ना था, ना कोई श्लोक बोलना था और ना ही कोई लंबा सत्संग होता था। वो तो बस अपनी लुंगी कसकर पलंग पर बैठ जाते थे और अपने **150** स्क्वायर फुट के छोटे-से बेडरूम में मौजूद लोगों को अपने तरीके से सिखाते थे। वो ज्यादातर अपने अनुभवों के उदाहरण से ही सिखाया करते थे।

ऐसे में पूरण जी की यह बात गौरतलब है

पूरण जी : मैंने कहा, गुरुजी क्या मैं शिवपुराण पढ़ लूं? उन्होंने कहा, “ठीक है 100 पन्ने छोड़कर बाद का एक पन्ना पढ़ लो।” उन्होंने कहा आधा छोड़ दो, जिसका मतलब है कि इसे पढ़ना नहीं है। उनका यही मतलब था (हंसते हुए)।

सवाल : 100 पन्ने छोड़कर बाद का एक पन्ना पढ़ो।

पूरण जी : उन्होंने इसी तरह समझाया कि पढ़ना नहीं है।

यदि आप किसी से कहें कि केवल एक पन्ना पढ़ें और बाकी के **100** पन्ने छोड़ दें और फिर एक पन्ना और पढ़ें, तो समझिए उसके पढ़ने का शौक तो यूं ही काफूर हो जाएगा।

बहरहाल, बिंदु लालवानी विश्व के इस सबसे गहन पुरुष के प्रति अपने अनुभवों को लेकर अपने लड़कपन के दिनों को याद करती हैं,

बिंदु जी : यदि आप कुछ पाना चाहते हैं तो उसे हासिल करने की राह में कुछ मुश्किलें आएंगी, लेकिन गुरुदेव ने इसे बहुत आसान बना दिया था। यह बस अपने आप हो जाता था जैसे कोई नदी का बहाव हो, वो अपना स्वाभाविक रास्ता चुन लेती है। गुड़गांव जाना है, मत्था टेकना है, सेवा करनी है, उनकी बातें सुननी है और घर आना है। हम ज्यादा कुछ समझे बिना ही अपने साथ कुछ ना कुछ लेकर आते थे। आपको पता ही नहीं चलता कि आपने अपने साथ क्या लाया है। और फिर 20-30 साल बाद या काफी वक्त गुजर जाने के बाद आप उस चीज को अमल में लाते हैं या उसे याद करते हैं।

हालांकि मैं बिंदु से काफी बड़ा था लेकिन समझ के मामले में मैं भी बिंदु जैसा ही था। मुझे वो सब सुनना बहुत अच्छा लगता था, जो गुरुदेव बताते थे लेकिन काफी बातों का मतलब मुझे देर से समझ आया।

मुश्किल तो यह थी कि गुरुदेव बहुत छोटे-छोटे वाक्यों में बात किया करते थे, जैसे किसी सुर का एमपी**3** फॉर्मेट हो। इन एक-वाक्यों की गूंज हमारी जिंदगी में बहुत आगे चलकर सुनाई दी।

वो कहा करते थे, “मृत्यु को सदा अपने साथ लेकर चलो।”

ये क्या! यह तो सिर के ऊपर से निकल गया।

फिर वो कहते थे, “यदि आप दुख पर जीत पाना चाहते हैं, तो पहले सुख पर विजय प्राप्त करना सीखिए।”

अरे! ये भी सिर के ऊपर!

आज इन एक-वाक्यों की हकीकत जिंदगी के सामने है और हमने इसे निभाना भी सीख लिया है। यदि आप भी इसी रास्ते पर चलें तो आप भी यकीनन सीख जाएंगे।

स्वर्गीय सुरेंदर जी ने डेढ़ दशक तक कानपुर में सेवा की थी। उनकी सादगी और विनम्रता उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी खासियत थी। आइए उन्हें सुनते हैं,

सुरेंदर जी : गुरुदेव हमेशा हमारे बीच इंसान के रूप में भगवान की तरह थे। हमें तो पता नहीं होता था लेकिन वो बड़े आसान तरीके से समझाते थे और बताते थे हमें ऐसा करना है। हमारी क्या मजाल कि हम किसी इंसान का दर्द दूर कर सकें या किसी के लिए कुछ कर सकें? लेकिन गुरुदेव ने हमें उस जगह तक पहुंचाया है, जहां से हमें आगे बढ़ने में मदद मिली। मुझे लगता है ये तो कोई भगवान ही कर सकता है। वो हमसे कहते कि जाओ उनकी तकलीफें दूर कर दो, तो ऐसे में हमें क्या पता चलेगा कि क्या करना है? बाकी जाने दीजिए मुझे कैसे पता चलेगा किसी इंसान का दर्द कैसे खींचना है? लेकिन गुरुजी ने हमें बताया कि ऐसा कैसे करना है। हम तो बस उनकी बताई हुई बातों का पालन करते थे और हम देखते थे कि उस इंसान का दर्द दूर हो जाता था।

हम में से ज्यादातर लोग खुद का आकलन करने में कमजोर थे। यदि महागुरु ने हमारा मार्गदर्शन करने का निर्णय लिया तो ज़ाहिर है हम इस काबिल होंगे? अगर ऐसा नहीं है, तो हम ये कह सकते हैं कि गुरुदेव की नियुक्ति की प्रक्रिया कुछ अनोखी थी।

दरअसल बात तो यह थी कि हम अपने अतीत और अपने भविष्य के बारे में अनजान थे और इसी वजह से हम खुद को स्वीकार करने में कमजोर थे।

सुरेंदर जी ने एक महान जीवन जिया और एक बड़े संत और एक उच्च कोटि के सेवादार के रूप में इस दुनिया से विदा हुए।

गुरुदेव के लिए सेवा तो अपने आध्यात्मिक विकास का अभ्यास करने का एक मुकम्मल ज़रिया था। वही एकमात्र रास्ता था, जहां वो अपने सभी शिष्यों को ले जाते थे। वे अपने शिष्यों को प्रवचन देने में वक्त ज़ाया नहीं करते थे, उनकी किताब में तो सेवा ही सबकुछ थी!

कृष्ण मोहन जी महागुरु के मार्गदर्शन का अनुभव बताते हैं,

सवाल : कृष्ण मोहन जी, गुरुदेव ने बताया था कि आपने अपने मामा जी के सिर पर हाथ रखकर उनका इलाज किया था। क्या उन्होंने सिर्फ आपके मामा जी का इलाज करने के लिए कहा था या फिर सभी लोगों का उपचार शुरू करने को कहा था?

कृष्ण मोहन जी : जब गुरुदेव ने मुझे निर्देश दिया तब मैंने अपने मामा का इलाज किया था। वो बेहतर हो गए। मुझे समझ नहीं आया कि उनका इलाज कैसे हो गया। जब मैंने गुरुदेव से पूछा, तो उन्होंने कहा, "बेटा, तुम जिसके सिर पर भी हाथ रखोगे वो बेहतर महसूस करेगा।"

हममें से ज्यादातर लोगों की तरह कृष्ण मोहन जी को भी ये नहीं पता था कि ये खासियत तो उनमें पहले से मौजूद थी। गुरुदेव ने तो सिर्फ उन्हें उनके पिछले जन्म की खूबियों से रूबरू कराया था।

यही वजह थी कि हम लोगों के लिए यह यकीन करना बेहद मुश्किल था कि इस राह में उन्होंने हमें इतनी जल्दी इतना आगे कैसे बढ़ा दिया था।

प्रदीप सेठी की पत्नी और गुरुदेव के शिष्य राजपाल जी की बेटी पुंचू इसी सिलसिले में एक खास घटना का जिक्र करती हैं,

पुंचू जी : मुझे याद है जब वो मुंबई में थे, तब उन्होंने मुझे कॉल किया था। उन्होंने मुझसे पूछा, “क्या कर रही है?” मैंने कहा, “गुरुजी ऐसे ही बैठी हूं।” उन्होंने कहा, “अच्छा तुम्हारी दादी सास ना, लॉकर की चाबी अपने तकिए के नीचे रखती हैं। एक काम करो, रात को चाबी लेकर मुझे दे दो। फिर मैं तुम्हें वहां से उनकी ज्वेलरी दे दूंगा और फिर तुम उसे वापस रख सकती हो।” मैंने कहा, “गुरुजी, आप मुझे उनकी ज्वेलरी देंगे?” उन्होंने पूछा, “क्यों? इसमें क्या गलत है?” मैंने कहा, “गुरुजी आपने ही तो हमें बताया था कि यदि आप मुझे कुछ देना चाहेंगे तो आप खुद ही देंगे। तो आप दूसरे की चीज लेकर मुझे क्यों देंगे?” उन्होंने कहा, “ये तो तुमने बड़ी अच्छी बात कही।” मैंने कहा, “गुरुजी आपने हमें यही तो सिखाया है।” फिर वो हंसने लगे। इस बीच माताजी की आवाज भी सुनी। बाद में मुझे पता चला कि उनके पास एक नया हैंड्स फ्री फोन था और बाकी के शिष्य उनके साथ बैठे हुए थे और वो सबको हमारी बातें सुना रहे थे। दूसरों को सिखाने का उनका यही तरीका था कि देखो ये बच्ची ऐसे बात कर रही है। माताजी ने

मुझसे कहा, “हैंड्स फ्री है पुंचू और ये सबको सुना रहे हैं तुम्हारी बात (हंसते हुए)।” मैंने कहा, “ठीक है।”

संतलाल जी उनके तेज विद्यार्थी थे और चीजों को बड़ी जल्दी सीखते थे। सरकारी महकमे में एक खास पद पर होने की वजह से वो बड़े रोबदार थे, लेकिन गुरुदेव ने एक जौहरी की तरह इस हीरे को तराशा था।

संतलाल जी : वो बड़े हल्के-फुल्के अंदाज में बताते थे। वो हमें सिखाते थे, सिखाने से मतलब ये है कि वो हमें कहते थे, बेटा ऐसा नहीं, ऐसा करो। वो हमें एहसास कराते थे कि कौन-सी चीज हमारे लिए सही नहीं थी।

गुरुदेव का सिखाने का सबसे अच्छा तरीका था हंसी-मजाक, जिसके जरिए वो प्रेरणा भी देते थे और अच्छी खासी डांट भी लगा देते थे। वो चाहते थे कि हम किताबी-ज्ञान में फंसने की बजाय अंतर्ज्ञान की खोज करें।

जब उन्होंने मुझे अपनी शरण में लिया, तब मैं भी ऐसा ही सिद्धांतवादी था। मैं थ्योरी में यकीन रखता था, और मुझे पौधों, प्राकृतिक उपचार, आयुर्वेदिक इलाज आदि की किताबें पढ़ने का बेहद शौक था। मैंने देखा कि जब ये प्राकृतिक उपचार अभिमंत्रित होते थे तो वे मेरी उम्मीद से ज्यादा कारगर साबित हुए। अपनी खराब याददाश्त के चलते मैं कभी-कभी गलत इलाज भी दे देता था, लेकिन वो भी असरदार रहता था।

इन बातों को देखकर मैं अक्सर हैरान हो जाता था।

एक दिन गुरुदेव ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और खूब डांट लगाई! उन्होंने मुझसे कहा कि जड़ी बूटियों और पौधों में अपना विश्वास रखने के बजाय खुद में विश्वास रखूं। उन्होंने कहा, "तू कागज भी माथे पर लगाकर जिसको दे देगा, तो वो ठीक हो जाएगा।"

ये चंद अल्फाज़ मेरे लिए जिंदगी भर का सबक बन गए।

मैंने इन शब्दों से सीखा और आगे भी सिखाया। जब एक सधा हुआ दिमाग, आपके आभामंडल को प्रकाशित करे, तो उसकी ताकत हमें ऐसी काबिलियत से नवाजती है, जिसकी गहराई का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता।

इन अल्फ़ाज़ों ने मुझे ये शेर याद दिला दिया जो मेरे हालात बखूबी बयान करता है

सफ़र में अब के अजब तजरबा निकल आया
भटक गया तो नया रास्ता निकल आया

शिष्यों में सटीक अनुमान लगाने की काबिलियत बढ़ाने के लिए गुरुदेव ने मंत्रोच्चारण, निस्वार्थ सेवा और गुणों में सुधार लाने को तरजीह दी। उन्होंने ज़्यादातर प्रशिक्षण स्वप्न अवस्था में दिखे!

पहलवान जी की बात करें तो गुरुदेव को तो उनके विश्वास को जागृत करना पड़ा। यहां हम एक ऐसे शख्स का मामला पेश कर रहे हैं, जो आध्यात्मिकता के प्रति जागे नहीं बल्कि उसके ख्यालों में सो गए। जी हां बिल्कुल ऐसा ही हुआ है, ज़रा सुनिए तो,

सवाल : इससे जाहिर यह होता है कि आप में इच्छा थी, तमन्ना थी लेकिन आप सोचते थे कि इस लाइन में ज्यादा से ज्यादा लोग ढोंगी थे और आप किसी ढोंग में नहीं फंसना चाहते थे। क्या ये सही है?

पहलवान जी : हां जी, बिल्कुल सही! जब मैं फार्म पर जाता था तो मैं लोगों से कहता था, भले ही मैंने कड़ा पहना लेकिन मैं उनमें नहीं मानता। जब अपनी आंखों से उनकी काबिलियत देख लूंगा तब मैं उनको मानूंगा।

सवाल : आप कडा भी पहनते थे और गुरुदेव पर विश्वास भी नहीं करते थे? फिर यह कैसे हो गया और फिर आपने क्या देखा जिससे आपको विश्वास हो गया?

पहलवान जी : मैंने किसी से पूछा कि लोग लौंग-इलायची से कैसे ठीक हो जाते हैं। उसने कहा कि उसे नहीं पता, गुरु जी खुद अपने हाथों से देते हैं। उसने कहा, “वो जिन लोगों को भी लौंग

इलाइची देते हैं, उनके घर बड़े गुरुवार को जाते हैं।" मैंने पूछा, "किस समय जाते हैं?" उसने कहा, "रात को 1 बजे से सुबह 3:15 बजे के बीच।" तो मैं रात में बैठ जाता था। 12:45 बजे अलार्म बजता था और मैं उठकर अपना चेहरा धोकर धूप जलाकर बैठ जाता था। हर दिन मैं सुबह उठता और कहता था, "गुरु जी नहीं आए।" जब मुझे नींद आती थी या मैं आलस महसूस करता था तो मैं अपने चेहरे पर छींटे मार लेता था, ताकि ये ना कहें कि मैं आया था और तुम सो रहे थे (जोरदार हंसी की आवाज)। ये कई दिनों तक चलता रहा।

सवाल : फिर?

पहलवान जी : उसके बाद मैं जहां बैठता था, वहीं सो जाया करता था जमीन पर ही। मैं इंतजार करते हुए देखता रहता था और वहीं सो जाता था। फिर एक दिन जब मैं सो गया था, तब गुरुजी आए और उन्होंने कहा, "यहां खाली जमीन पर मत लेटो। लेटने से पहले कपड़ा या चटाई बिछा लो।"

सवाल : वो आए थे मतलब? क्या वो आपके घर डुप्लीकेट चाबी लगाकर आए थे? वो कैसे आए थे?

पहलवान जी : ख्वाब में आए और मुझसे कहा कि खाली जमीन पर नहीं बैठना। उन्होंने कहा कि खाली जमीन पर नहीं लेटना, कोई कपड़ा यह दरी बिछा लिया कर।

सवाल : फिर क्या हुआ?

पहलवान जी : इसके बाद ऐसा हुआ कि मैं अक्सर गुड़गांव आता था। मुझे नहीं पता था कि मैं किस लिए आया था या क्या कर रहा था। फिर उन्होंने मुझसे दारू के बारे में पूछा, "पुत तू दारू छोड़ दे, बाकी मैं देख लूंगा।" इसके बाद मैंने दारू छोड़ दी। मैं बहुत पीता था, सुबह नशा उतारने के लिए और दोपहर में मैं नशा करने के लिए पीता था। उनके आशीर्वाद से मैंने इसे छोड़ दिया। उनकी कृपा से ही आज मैंने इसे पूरी तरह छोड़ दिया है।

पहलवान जी को कुश्ती लड़ने का बेहद शौक था, लेकिन अब वो अध्यात्म के विचारों से दो-दो हाथ कर रहे थे। उनके गुरु ने उन्हें एक ऐसा कर्म योद्धा बना दिया, जिन्होंने गुरुदेव के खांडसा फार्म के साथ-साथ स्थान पर भी चार दशकों तक निस्वार्थ सेवा की।

कपिल जी लोनावला में स्थान चलाते हैं और उन्होंने ऐसे कई लोगों का मार्गदर्शन किया, जो शिष्य बनने की राह पर थे। कपिल जी एक ऐसा अनुभव बताते हैं जो आध्यात्मिक जगत में भी लोगों ने नहीं सुना होगा। दरअसल वो अपनी स्वप्न-अवस्था में खुद को गुरुदेव की जासूसी करता हुआ पाते हैं और उन्हें कुछ ऐसा करते हुए देखते हैं, जिसके बारे में कभी नहीं सुना गया। कभी-कभी इन क्रियाओ का एहसास तो होता है लेकिन ये दृश्य नहीं होती। सुनने और समझने के लिए यह एक बिल्कुल नया विचार है।

सवाल : क्या गुरुदेव को लेकर कोई ऐसा अनुभव है जो आप हमसे बताना चाहेंगे?

कपिल जी : गुड़गांव में सेवा करते हुए मुझे बहुत-से ख्वाब आते थे। गुरुदेव मुझे सेवा करने और लोगों का इलाज करने और उन्हें छींटे देने (अभिमंत्रित किए गए जल के छींटे) आदि के लिए कहते थे। कई बार सपनों में गुरु जी और गुरुदेव, मैं और मेरे एक गुरु भाई के साथ टहलने गए। मैंने देखा गुरुदेव ने मेरे गुरु भाई के सिर पर अपना हाथ रखा और उसे इस बारे में नहीं पता था। उन्होंने सिर की तलवी पर हाथ रखा। उन्होंने कुछ किया और जब वो ऐसा कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि मैं उन्हें देख रहा हूं। वो मुस्कुराए और बोले, "तुम्हारे भाई की चौथी आंख खोल दी है।" वो एक बड़ा दिलचस्प अनुभव था। वो एक ख्वाब था, जिसके बारे में मैंने गुरुजी से बताया था और उन्होंने मुझे इसे अपने तक ही रखने और किसी को न बताने को कहा था। उन्होंने कहा कि मैं इस बारे में उस व्यक्ति से ना बताऊं। तो मैंने आज तक उसे यह नहीं बताया है।

सवाल : तो कपिल जी, क्या आपको वो सेवादार मिले, जिसके बारे में गुरुदेव ने आपके ख्वाब में बताया था। क्या उसकी शक्तियां बढ़ीं? क्या आपको उस सेवादार में कोई बदलाव नजर आया? क्या इस अनुभव के बाद आपने उसमें कुछ अलग देखा?

कपिल जी : वो बिल्कुल वैसे ही थे, जैसे वो पहले थे। वो हमेशा मददगार रहे हैं और लोगों की सेवा करते रहे हैं और उन्होंने हमेशा सेवा की और एक कदम आगे बढ़कर सेवा की। वो वैसे ही हैं और उसी तरह चीजें कर रहे हैं।

तीसरी आंख माथे के बीचोंबीच होती है जबकि चौथी आंख ठीक इसके विपरीत सिर के पीछे मौजूद रहती है। जब चौथी आंख खुलती है, तो आपको एक पतला-सा काग़ज़ फटने जैसा महसूस होता है और उस वक़्त आप असल में सिर के पीछे से भी देख सकते हैं।

गुरुदेव अपने शिष्यों की तीसरी आंख खुलने नही देते थे, क्योंकि वो नहीं चाहते थे कि लोग अतीत और भविष्य देखने के आनंद में फंसकर रह जाएं। आज मैं इस बात को समझ सकता हूं कि लोगों के विचारों को पढ़ना या हमारी और दूसरों की जिंदगी के भविष्य के बारे में जानना कितना बड़ा बोझ होता है। इस तरह की जानकारी दिमाग के लिए बेहद खतरनाक साबित हो सकती है।

केवल एक सिद्ध गुरु ही इसका दुरुपयोग रोकने और अपने शिष्यों की रक्षा करने के लिए ऐसा कर सकता है।

आइए ज़रा दिशा बदलते हैं...

क्या कोई समुद्र किसी संत के चरण स्पर्श करता है? क्या कोई नदी उनके चरणों में केसरिया तिलक लगा सकती है? क्या प्रकृति के तत्व उनकी धुन पर अपनी चाल बदल सकते हैं?

क्या इस बात में कोई सच्चाई है कि मोसेस ने समुद्र को बांट दिया था? या गुरुनानक देव कई दिनों तक नदी के जल के भीतर रहे थे? या फिर कबीर और जीसस और ऐसे ही दूसरे कई संतों ने अपने शरीर को निराकार कर लिया था?

ऐसे में हम भला इससे ज्यादा और क्या सोच सकते हैं कि सच्चाई अक्सर कल्पनाओं से बढ़कर होती है?

नादौन के संतोष जी अपना अनुभव बताते हैं। यदि इस पर यकीन करना खुद उनके लिए इतना मुश्किल था तो जरा सोचिए यह आपके लिए कितना मुश्किल होगा।

संतोष जी : क्या हुआ था कि गुरु जी हमें हरिद्वार ले जाते थे। जब हम हरिद्वार में थे, तो गुरुजी सुबह हमें डुबकी लगाने ले जाते थे। वहां संगम पर एक कोण था। गुरुजी वहां गए और जल में खड़े हो गए। गुरुजी ने हमें कहा, "बेटा जल में डुबकी लगानी है, चरण जल लेना है, मतलब चरणों का जल पीना है और फिर अपना महागायत्री मंत्र करना है और फिर जल से बाहर आना है।" तो सभी एक के बाद एक ऐसा करने लगे। वो पानी बहुत ठंडा था, क्योंकि मौसम ठंडा था। ठंडे पानी में एक डुबकी लगाना भी बहुत मुश्किल था, लेकिन गुरु जी के आशीर्वाद से मैं डुबकी लगा सका। हमें अपने परिवार के सभी सदस्यों के नाम लेकर बार-बार डुबकियां लगानी थी। मुझे 7-8 डुबकियां लगानी थी और मैं ठंड के मारे कंपकंपा रहा था। मैं बाहर आया और मैंने अपने कपड़े पहने लगा। इस बीच गुरुजी भी बाहर आ गए। वो बानियाँ में नहाते थे। हमारा कर्तव्य है कि जब गुरु दिखाई दे तो उनके चेहरे पर नहीं बल्कि उनके चरणों की ओर देखना चाहिए। मैंने देखा कि उनके अंगूठे के नाखून केसरी रंग में रंगे थे, वैसे ही जैसे हम पूजा में लगाते हैं। फिर क्या हुआ कि गुरुजी तो गुरुजी थे। उन्होंने कहा, "क्या देख रहा है?" जब मैं कपड़े पहन रहा था तो मैं सोचने लगा कि मैंने अभी-अभी क्या देखा।

हम रात में गुड़गांव में गुरुजी के घर पर वापस आए। हम सभी गुरुजी के साथ बैठे थे और मैं उनसे वो सवाल पूछने ही वाला था, लेकिन गुरु जी को पहले से पता था कि मैं क्या पूछने वाला हूं। तो उन्होंने झट से कहा, "मुझे नहीं पता तुम क्या सोचते जा रहे हो। जाओ जाकर सो जाओ।" लेकिन जो मैंने देखा था, मैं उसे समझने के लिए उत्सुक था।

मुझे गुरुवाणियों की कैसेट सुनना बहुत अच्छा लगता था। अगली दिन सुबह नहाने के बाद मैंने वो कैसेट लगा दी और मैं अपना पाठ करने लगा। वो कैसेट सुनने के दौरान मैंने बीच में सुना, "तीर्थ, नदियों का जल, तीर्थ स्थानों का जल, अपने मालिक से अरदास करते हैं कि दुनिया भर के पापों को धोते मेला हो गया है, ऐसी कोई महान हस्ती भेजिए जिससे यह जल निर्मल हो जाए।" जब मैंने यह सुना तो मैं बहुत रोमांचित और खुश हो गया और मैं हरिद्वार की घटना के बारे में सोचने लगा। मैं मन में यह विचार करने लगा कि गुरुजी तो शिव के रूप हैं और मुझे इसे लेकर कोई शक नहीं है। लेकिन गंगा ने उनकी पूजा की और उनके पैरों के अंगूठे में केसर तिलक भी लगाया।

भारत के दर्शनशास्त्र में ऐसी आवाज की चर्चा की जाती है जो सुनाई नहीं देती। प्रदीप सेठी एक ऐसे सवाल के बारे में बात कर रहे हैं, जो पूछा ही नहीं गया, लेकिन इसका अनकहा जवाब उन्हें गुरुदेव से मिला। गुरुदेव के लिए तो ये आम बात थी।

प्रदीप जी : हमें उनसे ज्यादातर आध्यात्मिक चीजें ही सीखने को मिलीं। अधिकांश समय हमारे जेहन में एक सवाल होता था और हम उनके सामने बैठ जाते थे और वो इन सवालों को पूछे बिना उनका जवाब दे देते थे। कई बार तो मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ, कई-कई बार हुआ। ऐसे बहुत-से सवाल हैं, बहुत-से जवाब हैं जो किसी एक इंसान के लिए सही नहीं होते और शायद दूसरे व्यक्ति के लिए भी वो सही ना हों, इसलिए हम किसी खास मुद्दे पर कभी प्रवचन नहीं करते थे। उन्होंने हमें बड़ा सीधा और सरल रास्ता दिखाया कि हर इंसान परमात्मा का हिस्सा होता है और उन्हें सुकून देकर हमें भी बदले में सुकून मिलता है। मंत्र भी हमें इसलिए दिए गए क्योंकि यह आत्म-अनुभूति का माध्यम था, लेकिन उन्होंने हमेशा ये बताया कि सेवा मंत्रों से कहीं ज्यादा ऊपर है। हालांकि उनके साथ हमारे संबंधों में मंत्रों ने भी बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

हमें जो मंत्र दिए गए थे वो सिद्ध मंत्र थे। वैसे, ये उन मंत्रों से अलग थे, जो वेद पुराणों या वेबसाइट पर पढ़ने और देखने को मिलते हैं। हम इस बात से अनजान थे कि शायद हम अपने पिछले जन्मों में इन मंत्रों में माहिर थे।

लेकिन गुरुदेव को इस बात का पूरा इल्म था।

उन्होंने बहुत कम समय में ही हमें इन मंत्रों में सिद्ध बना दिया और लोगों का इलाज करने या उनकी मदद करने के लिए हमें इन मंत्रों का इस्तेमाल करना सिखाया।

कभी-कभी हमारी स्वप्न अवस्था में हमें दूसरी शक्तियों से भी मंत्र प्राप्त हुए। लेकिन हम तो केवल उन **5-6** मंत्रों पर ही निर्भर थे, जिसका अभ्यास उन्होंने हमें कराया था।

गुरुदेव ज्यादातर लोगों को अपना पिया हुआ जल देकर अपने मंत्र दे देते थे और उनसे कहते, “मैंने तुम्हें इस मंत्र के **10,000** जाप दे दिए।” इसका मतलब यह हुआ कि वो अपने शिष्यों के

आध्यात्मिक विकास की रफ्तार बढ़ाने के लिए अपने स्वयं के मंत्रकोश से उन्हें मंत्र दे दिया करते थे।

इस विषय को लेकर संतलाल जी कुछ बताना चाहते हैं,

संतलाल जी : सबसे पहले तो वो हमें जाप देते थे और हमारा मार्गदर्शन करते थे और वो अपने ढंग से क्या करते थे, वो तो मुझे नहीं पता। लेकिन वो हमें जाप देते थे और अपने तरीके से प्रगति का आकलन करते थे। मैं उनके साथ 5 साल तक था। जब भी रात को 12 या 12:30 बजे लोग चले जाते थे तो वो मुझे बुलाते थे और मुझसे बात करते थे। यदि हमें कुछ समझ में नहीं आया, तो यह हमारी गलती है, लेकिन उनके लेवल पर तो वो हमें सिखाने की कोशिश करते थे।

सवाल : अपने शिष्यों को लेकर उनका क्या नजरिया था? वो क्या चाहते थे?

संतलाल जी : यह तो चाहते थे कि हम कुछ बनें। वो कहते थे कि अगर मेरे से बढ़ो तो मैं सफल हूं।

यदि संतलाल जी एक शायर होते तो अशोक साहिल के इन शब्दों में अपनी दास्तां कुछ यूं बयां करते,

तेरी रहमतों में कमी नहीं
मेरे एहतियात में ढील है
ना सबूत है,ना दलील है
ना सबूत है,ना दलील है
मेरे साथ रब-ए-जलील है
मेरे साथ रब-ए-जलील है

मैंने माता जी से पूछा कि गुरुदेव की अपने शिष्यों के बारे में क्या राय थी और जो उन्होंने सुना वो हमें चंद शब्दों में बता दिया,

सवाल : वो अपने शिष्यों से क्या चाहते थे? क्या वो कोई खास चीज की उम्मीद करते थे?

माताजी : वो चाहते थे कि उनके शिष्य जितनी हो सके उतनी सेवा करें, उसे आगे बढ़ाएं और उन्हें दूसरों को भी सिखाएं। उन्हें बहुत-सी उम्मीदें थी लेकिन वो इस बारे में ज्यादा बात नहीं करते थे।

गिरी लालवानी जी भी इसी तरह की राय रखते हैं,

गिरी जी : उन्होंने मुझसे कहा था, मैं चाहता हूं कि मेरे बच्चे मुझसे ज्यादा बलवान बनें। आखिर कौन पिता या गुरु नहीं चाहेगा कि उसके शिष्य उससे आगे निकल जाएं? यह सबसे अच्छी चीज थी, जो मैं उनके बारे में बता सकता हूं।

मैंने पूरण जी से भी इस बारे में एक सवाल किया और उनका जवाब भी बड़ा लाजवाब था,

सवाल : क्योंकि आप गुरुदेव के शिष्यों में से एक रहे हैं और आप हम सभी के भी बहुत करीब रहे हैं तो आपसे मेरा सवाल यह है कि आपके अनुसार जिन लोगों को उन्होंने सिखाया था, उन लोगों से उनकी क्या उम्मीदें थी?

पूरण जी : संपूर्ण समर्पण।

संपूर्ण समर्पण सुनने में तो केवल दो शब्द मालूम होते हैं, लेकिन इसके मायने बड़े गहरे हैं।

राजपाल जी इसे संक्षेप में कुछ यूं बताते हैं,

राजपाल जी : एक शब्द है जिसे हम विश्वास कहते हैं। विश्वास के सहारे आपकी यात्रा शुरू होगी। यदि आपका विश्वास है तो आप अपने गुरु के प्रति समर्पित हो पाएंगे। यदि आप अपने गुरु के प्रति समर्पित हो पाते हैं, तो वो आपको कर्मों के इस चक्र से मुक्त कर देंगे। इसी विश्वास की वजह से वो आपको स्वीकार करेंगे, वो अपनी संपत्ति से आपको समृद्ध कर देंगे, आपको आध्यात्मिक उपलब्धियां और आध्यात्मिक शक्तियां प्रदान करेंगे और उन शक्तियों को इस्तेमाल करने का तरीका बताएंगे और उनके इस्तेमाल के लिए अनुशासन भी सिखाएंगे।

वैसे यह विचार तो शायद गुरुदेव के लिए भी कुछ ज्यादा ही महत्वाकांक्षी था। उन्होंने शायद गालिब का ये शेर नहीं सुना होगा,

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन
हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन
दिल के खुश रखने को ग़ालिब ये ख्याल अच्छा है

आत्मसमर्पण!इस एक शब्द को निभाना हमारी सोच से सैकड़ों गुना मुश्किल है। गुरुदेव की विनम्रता और सादगी के चलते बहुत-से लोगों के लिए उनकी अलौकिक गहराइयों का अंदाजा लगाना भी मुश्किल था। वो दिखावा किए बिना अपना काम कर देते थे। बहुत कम ही ऐसे मौके थे, जब हमें उनकी आध्यात्मिक विराटता की झलक देखने को मिली थी।

जब मैंने उनके कमरे में लगी देवी की एक तस्वीर के बारे में उनसे पूछा तो उन्होंने मुझसे कहा, "ओए छड्ड, मैं एस तरह सौ बनाइयां।"

मैं यकीन से कह सकता हूं कि जब एक इंसान शिव की शक्ति का प्रतीक बन जाता है तो उसे समझ पाना किसी भी साधु, संत, महात्मा, सैनिक, फकीर, जहाज़ी को समझने से कहीं ज्यादा मुश्किल होता है।

आगे हम जिन शब्दों को सुनने जा रहे हैं वह सोनीपत के स्वर्गीय संतलाल जी के हैं,

संतलाल जी : मैं सिर्फ इतना कह सकता हूं कि उनके जैसा इस दुनिया में कोई नहीं है। यही मैं कह सकता हूं। बड़े दिलवाले थे, बड़े मददगार थे। वैसे तो हर गुरु में ये गुण होते हैं, लेकिन मैं यकीन से कह सकता हूं कि जितना उन्होंने इसके बारे में बताया और इसका पालन किया, उतना किसी और ने नहीं किया। सच तो यह है कि इसे बताने के लिए कोई शब्द नहीं हैं। मैं विश्वास के साथ ये कह सकता हूं कि जिंदगी का अगर कोई मतलब मिला है, तो उनसे मिलने के बाद कि कैसे जिंदगी जीना है। वो हमेशा हर तरह से लोगों का दुख और तकलीफें दूर करने की कोशिश करते थे, चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े। यह बहुत बड़ी बात है।

सवाल : बहुत बड़ी बात है।

इसे गुरुदेव की महानता और उनके सिखाने का अनोखा अंदाज ही कहेंगे कि वो हमें बार-बार गिरकर संभलने का मौका देते। वो फिर हमें आगे बढ़ाते और हम बार-बार लड़खड़ाते और फिर वो हमें संभालते, तब तक, जब तक हमारा लड़खड़ाना कम नहीं हो गया!

मुझे उम्मीद है कि एक दिन हमारे कदम बिल्कुल भी नहीं डगमगाएंगे।

आध्यात्म के इस खेल में एक कोच की भूमिका निभाते हुए गुरुदेव ने हमें क्लीन बोल्ड होने दिया, लेकिन नेट प्रैक्टिस के दौरान लगातार हमारा हौसला भी बढ़ाया। वो सब जानते थे और उन्हें हमारी यात्रा की शुरुआत से कहीं पहले से हमारे सफर का रास्ता पता था।

गुरुदेव की बेटी रेणु ने हमें उनके पिता की कुछ ऐसी बातें बताईं, जो आम बातचीत में उभरकर नहीं आतीं। ज्यादातर लोग अपनी अहमियत की आस में रहते हैं, लेकिन इस शख्स ने तो अपनी अहमियत को भी दरकिनार कर दिया था,

रेणु जी : वो कहते थे इन सब में मत फंसो और आगे जाकर मुझ में भी मत फंसो।

इसे तो हम ऐतिहासिक बात ही मानेंगे! दूसरों की जिंदगी में अहमियत न रखने की चाहत तो चंद लोगों में ही देखने को मिलती है। वैसे देखा जाए तो जिस इंसान का नाता दिव्य से जुड़ गया हो, उसे भला किसी का ध्यान अपनी ओर खींचने की क्या जरूरत!

उनके जैसे शख्स के लिए तो यह अपने आप में एक महत्वाकांक्षी सोच है कि वो अपने शिष्यों को खुद से आगे देखना चाहते थे। वो अपने इस अनुमान में सही थे कि सभी लोग समान हैं लेकिन कुछ लोग दूसरों से ज्यादा मुकम्मल होते हैं। पर उन्होंने इस बात को कोई तरजीह नहीं दी।

हम ना तो एक जैसी पृष्ठभूमि से थे, ना हम में एक जैसी हिम्मत और दृढ़ निश्चय था।

हम लोग त्याग और समानता के साथ-साथ समय देने में भी सक्षम नहीं थे।

गुरुदेव अपना शरीर छोड़ने के बाद भी लगातार हमें हिम्मत और प्रेरणा देते हैं। भले ही हमें अपने वादों पर यकीन ना हो, लेकिन हमें उनकी प्रतिबद्धताओं पर पूरा भरोसा है,

और इसी बात में हमारी सफलता छिपी है,

अपने गुरु को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं उर्दू के चंद अशआर पेश करना चाहूंगा,

लब क्या बताएं कितनी अज़ीम उसकी जात है
सागर को सीपियों से उलझाने की बात है
सूरज का, चांद का, तो है गुजर नहीं वहां
वो है जहां, वहां पर ना दिन है या रात है
लब क्या बताएं कितनी अज़ीम उसकी जात है

गुरुदेव की महानता बयां करने के लिए शब्द नहीं हैं। ये तो समुद्र और सीपियों को मिलाने जैसा है। वहां ना तो सूरज मायने रखता है ना ही चांद का कोई महत्व है। जिस मुकाम पर वो पहुंचे हैं वहां ना दिन है ना रात है, बस उन्हीं का एहसास है।